जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड की तरलता एवं अल्पकालीन शोधनक्षमता का विष्लेषणत्मक अध्ययन – चालू एवं त्वरित अनुपात के विषेष सन्दर्भ में ।

रविन्द्र कुमार शर्मा [1], डॉ नम्रता गोल्यान [2]

[1]शोधार्थी (वाणिज्य विभाग), टांटीया विष्वविद्यालय (श्री गंगानगर)/सहायक आचार्य (ई.ए.एफ.एम), राजकीय लोहिया महाविद्यालय (चूरू)
[2]सहायक आचार्य (वाणिज्य विभाग), टांटीया विष्वविद्यालय (श्री गंगानगर)

शोध सारांष

जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के गठन का मुख्य उद्धेष्य पष्चिमी राजस्थान के आम नागरिकों के लिए सुगमता के साथ विद्युत की उपलब्धता सुनिष्चित करना तथा किफायती दरों पर गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति को बनाये रखना है, जो कि जितना अधिक जटिल कार्य है उतना ही महत्त्वपूर्ण भी है। इस कार्य के क्रियान्वयन हेतु वृहद स्तर पर इन्फ्रास्ट्रचर निर्माण करने के साथ–साथ पूंजी, श्रम और कुषलता की महती आवष्यकता होती है जो कि बिना वित्त और प्रभावपूर्ण वित्तीय प्रबन्ध के असंभव है, चूंकि निगम एक सार्वजनिक कम्पनी है जिसका स्वामित्व और नियन्त्रण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सरकार तथा आमजन से जुडा होता है, इसके समस्त संसाधन सार्वजनिक संसाधनों की श्रेणी में आतें है । निगम के ये संसाधन जनता की सम्पति माने जाते है और इनका उपयोग जनकल्याण एवं जन–सेवा के निमित्त ही किया जाता है अतः इसके संसाधनों में होने वाली किसी भी प्रकार की क्षति एक सार्वजनिक क्षति है। इसी प्रकार निगम की आय भी एक सार्वजनिक आय है क्योंकि यह अन्ततः राज्य के कोष, सरकार के वित्तीय संसाधन एवं सार्वजनिक कल्याण की योजनाओं के संचालन में प्रयुक्त होती है। अतः यहां यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि निगम के संसाधनों अर्थात् कोषों की प्रभावषिलता बनी रहे, जिसके लिए आवष्यक है कि निगम के वित्तीय विवरणों का अध्ययन एवं विष्लेषण किया जावें। अतः प्रस्तुत आलेख का उद्वेष्य निगम की **अल्पकालीन शोधन क्षमता अर्थात तरलता** का विष्लेषण करके यह ज्ञात करना है कि –

- क्या वास्तव में निगम अपने दैनिक परिचालन खर्चों और अल्पकालिक दायित्वों को नियत समय पर भुगतान करने में समर्थ है ?
- क्या यह अपनी अल्पकालीन सम्पत्तियों/ संसाधनों का प्रभावी ईष्टतम उपयोग कर पा रही है ?
- क्या निगम में एक कुषल राजस्व संग्रहण नीति क्रियान्वीत है ?

मुख्य शब्द – शोधन क्षमता, चालू अनुपात, त्वरित अनुपात, परिचालन दक्षता, तरलता, डिस्कॉम, पीडीसी देनदार, अनुदान।

प्रस्तावना

राजस्थान भारत में भौगोलिक दृष्टि से सबसे वृहद राज्य है यहां की भौगोलिक परिस्थितियां एवं प्राकृतिक संसाधन इसे अन्य राज्यों की तुलना में काफी विषेष बनाती है । इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 342239 वर्ग किमी है जो देष के

कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिषत है । स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालयत्र, भारत सरकार के अनुसार 2025 में राजस्थान की जनसंख्या लगभग 8.40 करोड अनुमानित है । भौगोलिक रूप से राजस्थान को 4 प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है जिसमें से एक है – **पष्चिमी रेगिस्तान**, राजस्थान के क्षेत्रफल का 60 प्रतिषत से अधिक भाग इस पष्चिमी रेगिस्तान के अन्तर्गत आता है और राजस्थान की 40 प्रतिषत से अधिक जनसंख्या यहां निवास करती है । राजस्थान का यह हिस्सा अपने विषाल रेगिस्तान में विभिन्न विविधताओं को संजोया हुआ है, यहां का जीवन इसके नाम के अनुरूप ठेठ मरू (रेगिस्तानी) है । पष्चिमी रेगिस्तान, राजस्थान में सबसे अधिक भौगोलिक विषमताओं वाला भू–भाग है । सामरिक रक्षा की दृष्टि से भी यह भू–भाग महत्त्वपूर्ण है क्योकि प्रदेष का यह भू–भाग पाकिस्तान के साथ एक लम्बी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा (लगभग 470 किमी लम्बी) भी बनाता है । **जोधपुर विद्युत वितरण निगम (जोधपुर डिस्कॉम) इसी विषमताओं वाले पष्चिमी रेगिस्तानी मरूस्थलीय प्रदेष में विद्युत वितरण कार्य को सुचारू एवं समन्वित ढंग से क्रियान्वित कर रहा है ।** निगम का गठन राजस्थान स्टेट ईलेक्ट्रीसिटी बोर्ड के विघटन के बाद राज्य सरकार द्वारा अधिसूचना जारी कर कम्पनी अधिनियम 1956 के तहत विद्युत वितरण ईकाई के रूप उपभोक्ताओं को गुणवत्ता युक्त **विद्युत आपूर्ति** उपलब्ध कराने के उद्देष्य सें दिनांक 19 जुलाई 2000 को किया गया । निगम मुख्यतया भौगोलिक रूप से राजस्थान के **दो वृहद् संभागों– जोधपुर और बीकानेर** में विद्युत का वितरण/ आपूर्ति और परिवीक्षण एवं संधारण का कार्य करता है । निगम का कार्य इसलिए ओर भी महत्त्वपूर्ण हो जाता हैं क्योकि यह भारत की पाकिस्तान के साथ लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर भी **बोर्डर फल्ड लाईट (बीएफएल)** के माध्यम से 24 घण्टे 7 दिन लगातार विद्युत वितरण एवं आपूर्ति सुचारू रूप से सुनिष्चित करता है । **वर्तमान में निगम बीकानेर शहर में विद्युत वितरण का कार्य नहीं करता है ।** बीकानेर शहर में विद्युत वितरण की व्यवस्था वर्ष 2016 से निगम की फ्रेन्चाईजी के रूप में नीजी क्षेत्र द्वारा पीपीपी मोड पर ठाॅम्स (बीकानेर इलेक्ट्रीसिटी सप्लाई लिमिटेड) द्वारा उपलब्ध करवायी जा रही है । सुचारू विद्युत वितरण के लिए आवष्यक है कि निगम की अपनी सम्पत्तियों में पर्याप्त **तरलता** रखना आवष्यक है ताकि वह अपने दैनिक परिचालन कार्यों को बिना किसी व्यवधान के आसानी से सम्पन्न कर सके ।

तरलता शब्द तरल से बना है , तरल अर्थात् द्रव्य अर्थात् जो आसानी से बिना कठिनाई के बह सके । इसी प्रकार व्यवसाय के सम्बन्ध में तरलता का अर्थ एक ऐसी सम्पत्ति से है जो आसानी से किसी दूसरी सम्पत्ति में परिवर्तित हो सके। दूसरे शब्दों में कहे तो तरलता से तात्पर्य सम्पत्तियों को शीघ्र नगद में परिवर्तित करने की योग्यता से है ताकि एक संस्था अपने अल्पकालिक दायित्वों का भुगतान बिना किसी वित्तीय कठिनाई के कर सके। बिना पर्याप्त तरलता के कोई व्यवसाय लम्बे समय तक जीवित नहीं रह सकता । तरतला की कम मात्रा भी व्यवसाय में साख /ख्याती को ऋणात्मक रूप से प्रभावित करती है कम तरलता से वित्तीय जोखिमें बढ़ आती है , संस्था के दिवालिया होने का खतरा ज्यादा रहता है , आपूर्तिकर्ताओं एवं कर्मचारियों को समय पर भुगतान न होने से संचालन दक्षता में कमी आती है, ओर तो ओर निवेषकों का विष्वास भी संस्था के प्रति डांवाडोल रहता है । इसी प्रकार अधिक तरलता भी संस्था के लाभों पर प्रभार मानी जाती है अधिक तरलता से संस्था के लाभ कम हो जाते है । अतः तरलता एक दुधारी तलवार है जिसकी पर्याप्त एवं संतुलित मात्रा ही संस्था के भविष्य को सुरक्षित, स्थिर एवं विकासोन्मुख बनाती है ।

चूंकि जोधपुर डिस्कॉम एक विद्युत वितरण कम्पनी है, यह विद्युत स्वयं उत्पादित नहीं करती है बल्कि उत्पादन कम्पनियों से खरीदकर उपभोक्ताओं को सीधे वितरित करती है, डिस्काम का विद्युत उत्पादन कम्पनियों के साथ विद्युत खरीद अनुबन्ध भी होता है जिस कारण इनको खरीदी गयी बिजली का भुगतान निष्चित समय–सीमा पर ही करना होता है इस कारण इनका पूरा संचालन निरन्तर नगदी प्रवाह अर्थात् तरलता पर ही टिका हुआ रहता है । इसके अलावा निर्बाध आपूर्ती हेतु दैनिक परिचालन एवं ढांचागत मरम्मत व्ययों को पूरा करने, नई तकनीक में निवेष करने, ऋणों पर ब्याज भुगतान करने, राजस्व वसूली चक्र की अधिक अवधि अन्तराल को भरने हेतु पर्याप्त तरलता का होना डिस्कॉम के लिए अति–आवष्यक है ।

शोध साहित्य –

भारत का विद्युत क्षेत्र गंभीर वित्तीय असंतुलन परिचालन अक्षमताओं एवं तरलता की गंभीर समस्याओं से जुझ रहा है। उत्पादन , वितरण एवं प्रसारण के क्षेत्र में पर्याप्त निवेष और सुधारों के बावजूद विद्युत कम्पनियां मूल्य श्रंखला की सबसे कमजोर कडी बनी हुई है । जिसमें सबसे अधिक संकटग्रस्त एवं समस्याग्रस्त कम्पनियां वितरण कम्पनियां ही है । अनेक शोधकर्ताओं ने विद्युत वितरण कम्पनियों की वित्तीय स्थिति का विष्लेषण किया है, जिनमें प्रमुख निम्नानुसार है –

सिंह और मिश्रा (2018) – इन्होने भारत में विद्युत क्षेत्र सुधारों का विद्युत वितरण कम्पनीयों की निष्पादन क्षमता पर प्रभावों का गहन विष्लेषण किया , अध्ययन में निष्कर्ष निकाला गया कि संरचनात्मक सुधारों के बावजूद अधिकांष वितरण कम्पनियों की तरलता एवं लाभप्रदता की स्थिति अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सकी । इसका प्रमुख कारण उन्होने उच्च वितरण हानियां, विद्युत विपत्रों की बकाया वसूली में नाकामी एवं परिचालन अक्षमताओं को बताया ।

भट्टाचार्य और पटेल (2015) – भटटाचार्य और पटेल ने भारतीय बिजली क्षेत्र में रेगुलेटरी एसेट्स की अवधारणा पर विस्तृत शोध किया । उनके अनुसार अधिकांष डिस्कॉम का चालू अनुपात वित्तीय विवरणों में तो संतुतिल दिखता है लेकिन वास्तव में उनके पास नगद की भारी कमी होती है ऐसा इसलिए होता है कि वे अपने उन खर्चो को भी बैलेन्स शीट में सम्पत्ति पक्ष में दिखाती है जिन्हे नियामक आयोग ने अभी तक टैरिफ में शामिल करने की अनुमति प्रदान नहीं की है । शोधकर्ताओं के अनुसार ऐसी काल्पनिक तरलता प्रदर्षित करने से ये डिस्कॉमस ऋण जाल में फंस गयी है ।

ओजिली पी के (2018) – ओजिली ने अपने शोध में यह स्थापित किया कि डिजिटल वित्त और तरलता स्थिति के बीच एक सकारात्मक सह–सम्बन्ध है उन्होने तर्क दिया कि डिजिटल भुगतान प्रणालियों को अपनाने से कम्पनियों में नगद परिवर्तनीय अनुपात बढ जाता है । डिस्कॉम के सन्दर्भ में उनके अनुसार जब उपभोक्ता डिजिटल भुगतान प्रणालीयों का उपयोग करके विद्युत विपत्रों का भुगतान करता है तों ऐसी स्थिति में डिस्कॉम का नगद तुरन्त बढ जाता है जिससे कि डिस्कॉम अपने चालू दायित्व विषेषकर उत्पादन कम्पनियों को समय पर भुगतान कर सकती है । उनके अनुसार उच्च चालू अनुपात के लिए केवल अधिक सम्पतियों का होना ही आवष्यक नहीं है बल्कि अधिक गति से उन सम्पत्तियों का नगद में परिवर्तन होना भी आवष्यक है ।

षर्मा एवं गोल्यान (2026) – शर्मा एवं गोल्यान ने अपने अध्ययन में जोधपुर डिस्कॉम की उपभोक्ता अनुभव एवं सेवा गुणवता का विष्लेषण कारक विष्लेषण की सहायता से किया । अध्ययन में यह पाया गया कि विद्युत आपूर्ती की विष्वसनीयता, बिलिंग पारदर्षिता, षिकायत निवारण व्यवस्था तथा कर्मचारियों के उत्तरदायित्व सम्बन्धि कारक उपभोक्ता संतुष्टि को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते है । यद्यपि यह अध्ययन मुख्य रूप से उपभोक्ता सेवा गुणवत्ता पर आधारित है तथापि इसके निष्कर्ष अप्रत्यक्ष रूप से डिस्कॉम की वित्तीय तरलता स्थिति को प्रभावित करने वाले गैर–वित्तीय आयामों को समझने में सहायक है। अध्ययन यह बताता है कि बेहतर उपभोक्ता संतुष्टि से राजस्व वसूली में सुधार तथा नगदी प्रवाह की स्थिति सुदृढ़ होने की संभावना बढ़ती है ।

अनुसंधान अन्तर –

साहित्य सर्वेक्षण की प्रक्रिया के दौरान यह पाया गया है कि अंधिकाष साहित्य /षोध ऊर्जा के उत्पादन, विद्युत प्रसारण एवं वितरण के नेटवर्क विकास, वितरण एवं उत्पादन क्षेत्र में तकनीक एवं प्रौद्योगिकी, वितरण क्षेत्र के मानव संसाधन प्रबन्ध, बिजली एवं ऊर्जा के स्त्रोत, बिजली गुणवत्ता प्रणाली, विद्युत क्रय –विक्रय प्रणाली पर ही आधारित है । इसके अलावा उक्त शोध उस समय अवधि का हिस्सा है जब डिजिटल वित्त अपनी शैषवास्था में था। साहित्य अवलोकन करने पर यह भी ज्ञात हुआ कि राजस्थान की किसी विषेष वितरण कम्पनी के भौगोलिक परिदृष्यों को

ध्यान में रखते हुए विद्युत वितरण कम्पनीयों की शोधन क्षमता, तरलता स्थिति, घाटे के कारण, प्रबन्धकीय असफलता, घाटे की वित्त व्यवस्था, उपभोक्ता सेवा गुणवत्ता, उपभोक्ता बजट प्रभार, टैरिफ अनुदान का वितरण कम्पनी की वित्तीय स्थिति पर प्रभार, वितरण कम्पनियों पर राजनीतिक हस्तक्षेपता को सूक्ष्म स्तर पर शामिल करते हुए कोई अध्ययन नहीं किया गया है । **अवलोकानार्थ यह भी ज्ञात हुआ कि राजस्थान जैसे वृहद एवं सामरिक महत्व के राज्य के विद्युत उद्योगो के वित्तिय निष्पादन पर भी कोई अध्ययन नहीं किया गया है।** प्रस्तुत शोध उपरोक्त वर्णित तथ्यों को शामिल करते हुए जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड की वित्तीय स्थिति एवं वित्तीय निष्पादन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण घटक – अल्पकालीन शोधन क्षमता (चालू अनुपात एवं त्वरित अनुपात) के सूक्ष्म अध्ययन को शामिल करेगा और विद्युत वितरण के व्यवसाय में लगी हुयी कम्पनियों के कार्यों को ओर अधिक प्रभावी एवं कुषल रूप से सम्पादित करने हेतु मील का पत्थर साबित होगा।

शोध अध्ययन का औचित्य एवं उद्देष्य –

वर्तमान समय में व्यवसाय को प्रारम्भ करने, सुचारू रूप से चलाने और उन्नत करने के लिए वित्त की महत्ती आवष्यकता होती है । वित्त के अभाव में कोई भी योजनाएं केवल कागजों तक ही सीमित रहती है, उनको धरातल पर उतारना या मूर्तरूप देना असंभव होता है । यदि जैसे –तैसे पर्याप्त वित्त के अभाव में कोई योजना को कार्यरूप दे भी दिया जाये तो कुछ समय पष्चात उनके पर्यवेक्षण, संचालन और नियंन्त्रण में कठिनाई का सामना करना पड़ता है । कई बार यह भी देखा जाता है कि पर्याप्त वित्त की उपलब्धता के उपरान्त भी व्यवसायिक असफलता प्राप्त होती है जिसके पीछे मूल रूप से वित्त का कुप्रबन्ध उत्तरदायी होता है । वित्त आधुनिक व्यवसाय में जीवन प्रदायी रक्त के समान है । अगर कहा जाये कि वित्त किसी उद्योग और वाणिज्य की आत्मा होती है तो इस कथन में कोई अतिष्योक्ति नहीं होगी । जिस प्रकार मकान के निमार्ण के लिए सीमेंट, पहियो के लिए चिकनाई युक्त तेल (ग्रीस), कृषि के लिए पानी, हड्डियों के लिए मज्जा एवं नाडियों के लिए रक्त का संचरण महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण है – व्यवसाय के लिए वित्त और वित्त का प्रबन्ध। अतः बिना पर्याप्त वित्त के कोई व्यवसाय लम्ब समय तक जीवित नहीं रह सकता और बिना प्रभावपूर्ण वित्तीय प्रबन्ध के कोई व्यवसाय उन्नत, समृद्व और विकसित नहीं रह सकता।

इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधार्थी द्वारा अध्ययन के लिए इस विषय का चयन किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा विद्युत वितरण व्यवसाय में लगे, राजस्थान सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम– जोधपुर विद्युत वितरण निगम लि. (जोधपुर डिस्कॉम) के वित्तीय निष्पादन का मूल्यांकन किया गया है एवं तरलता स्थिति का चालू अनुपात एवं त्वरित अनुपात के माध्यम से विष्लेषण किया गया है । प्रस्तुत शोध का उद्वेष्य अध्ययन अवधि के दौरान डिस्कॉम की अल्पकालीन शोधन क्षमता/तरलता स्थिति में महत्वपूर्ण अन्तर की जांच करना है ।

अध्ययन की अवधि तथा क्षेत्र –

प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के क्रियाकलापों तक ही सीमित है । अवधि के हिसाब से वर्ष 2012–13 से 2024–25 तक के संमको के आधार पर मूल्यांकन एवं विष्लेषण किया गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन में कम्पनी की उक्त अवधि के वित्तीय विवरणों के आधार पर शोधन क्षमता, भुगतान प्रणाली, सरकारी अनुदान, लाभदायकता, पूंजी संरचना, राजस्व एवं व्यय, कार्यषिल पूंजी प्रबन्ध ईत्यादि पहलुओं को सम्मिलित किया गया है ।

अध्ययन की परिसीमाएं –

प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य परिसिमाएं निम्नलिखित है –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन वितरण निगम कम्पनियों के केवल 2012–13 से लेकर 2024–25 तक के ही संमको तक ही सीमित है ।
2. अध्ययन संमको में वित्तीय वर्ष 2012–13 से 2014–15 (3 वर्षो) के लिए डिस्कॉम के वित्तीय विवरणों में पीडीसी देनदारों का विवरण अलग से नहीं दर्षाया गया है । इस कारण इस अवधि के लिए त्वरित अनुपात की गणना समस्त देनदारों को त्वरित सम्पत्तियां मानकर की गयी है । अतः इस अवधि के लिए त्वरित अनुपात पूर्णत समायोजित नहीं बल्कि आंषिक रूप से समायोजित है ।

3. प्रस्तुत अध्ययन विद्युत वितरण कार्यो मे लगे राज्य सरकार के तीनों उपक्रमों मे से केवल जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के विष्लेषण तक ही सीमित है।
4. वित्तीय विवरणों का विष्लेषण मुख्यतयाः द्वित्तीयक संमको पर आधारीत है ।
5. प्राप्त संमकों के संकलन में सांख्यीकी विभ्रमों का समायोजन नहीं किया गया है।
6. संमको की विष्वसनियता कम्पनी के आन्तरिक एवं बाह्य अंकेक्षण पर पूर्णतः निर्भर करती है ।
7. अध्ययन से प्राप्त निर्णयों में जोखिम, अनिष्चितता तथा प्राकृतिक आपदा जैसे तत्वों का समायोजन नहीं किया गया है ।

शोध परिकल्पना –

भ्$_{01}$रू कम्पनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता अर्थात् चालू अनुपात में उदय योजना लागू होने के पहले और बाद की अवधि में औसतन कोई महत्वपूर्ण सार्थक अन्तर विद्यमान नहीं है।

भ्$_{02}$**रू** शोध अवधि के दौरान कम्पनी की सम्पत्तियों का नगद में परिवर्तनीय अनुपात अर्थात् त्वरित अनुपात के औसत में कोई महत्त्वपूर्ण सार्थक अन्तर विद्यमान नहीं है ।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध अन्वेषणात्मक और विवरणात्मक प्रकार का है । अन्वेषणात्मक शोध तब किया जाता है जब शोध का उद्देष्य कार्य–कारण सम्बन्ध ज्ञात करना हो। यह शोध विवरणात्मक शोध का मार्ग प्रषस्त करता है । विवरणात्मक शोध के अन्तर्गत उपलब्ध तथ्यो, ज्ञान और सांख्यीकी संमको के आधार पर अध्ययन की विषयवस्तु का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण एवं विष्लेषण करना होता है ।

प्रस्तुत शोध द्वित्तिय समको पर आधारित है । ये समंक जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड की ऑडीटेड वार्षिक वित्तीय प्रतिवेदनों से प्राप्त किए गए है । कम्पनी की तरलता और शोधनक्षमता के विष्लेषण हेतु डिस्कॉम के पूर्व के वित्तीय वर्षो के चिटठा विवरण, लाभ–हानि खातों और तलपट को आधार माना गया है । इसके अलावा विद्युत मंत्रालय– भारत सरकार, विद्युत मंत्रालय –राजस्थान सरकार, उत्पादन निगम, प्रसारण निगम और डिस्कॉम की बेवसाईट से भी आकडे एवं तथ्यों का संकलन किया गया है । तरलता में समयानुसार उदय योजना के पहले और बाद के अन्तर की जांच के लिए ज टेस्ट, उपनति विष्लेषण, द्वि–मार्गी प्रसरण विष्लेषण (।छव्ट।) और च्वेज.भ्वब ज्नामल भ्ैक परीक्षण का प्रयोग किया गया है । सार्थकता स्तर 5 प्रतिषत निर्धारित किया गया है जिसे वित्तीय अनुसंधानों में मानक माना जाता है ।

चालू अनुपात विष्लेषण –

प्रस्तुत षोध के अन्तर्गत जोधपुर डिस्कॉम की अल्पकालीन वित्तीय स्थिति के मूल्यांकन हेतु चालू अनुपात को प्रमुख सूचक के रूप में अपनाया गया है । अध्ययन अवधि के अन्तर्गत संमक वित्तीय वर्ष 2012–13 से 2024–25 तक के लिए गए है जो कि विस्तृत एवं व्यापक है । अध्ययन के दौरान कम्पनी के वित्तीय विवरणों से प्राप्त चालू अनुपातों के विष्लेषण के लिए उपनति एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है । परीक्षण से प्राप्त परिणामों के आधार पर चालू अनुपात एवं शोधन क्षमता की सार्थकता एवं औचित्यता का विष्लेषण किया गया है। शोध अवधि के दौरान प्राप्त चालू अनुपात निम्न सारणी के अन्तर्गत दर्षाये गए है –

वित्तीय वर्ष	2012–13	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
चालू अनुपात	0.72	0.51	0.45	0.43	0.45	0.41	0.41

वित्तीय वर्ष	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23	2023–24	2024–25
चालू अनुपात	0.48	0.54	0.56	0.55	0.69	0.68

1. **उपनति परीक्षण** – उपर्यक्त गणन किए गए चालू अनुपातों के उपनति विष्लेषण किया जावे तो निम्न ग्राफ प्राप्त होता है –

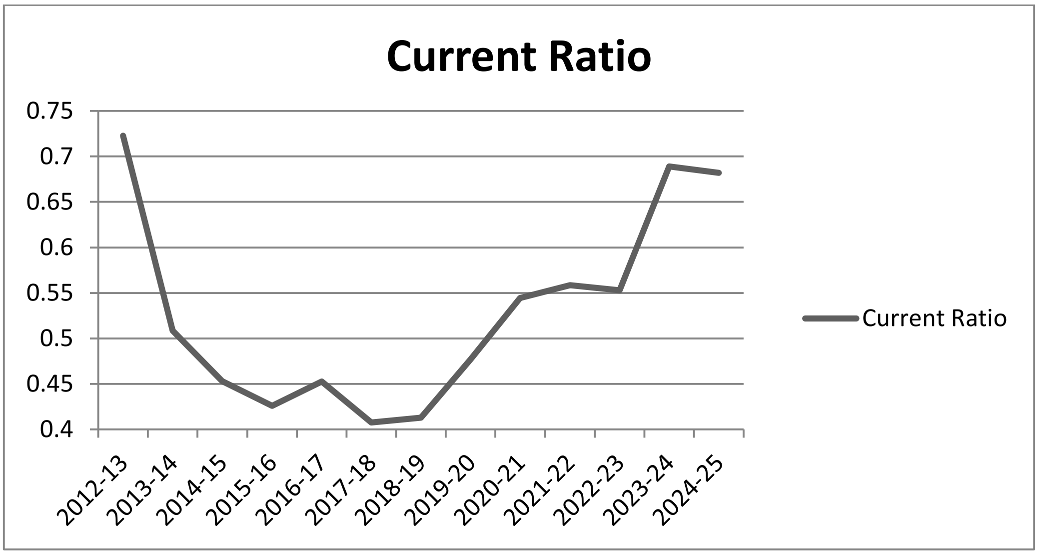

उपर्युक्त उपनति ग्राफ वित्तीय वर्ष 2012–13 से 2024–25 तक के लिए जोधपुर डिस्कॉम के चालू अनुपात को प्रदर्षित कर रहा है इस उपनति ग्राफ से प्राप्त परिणामों को विष्लेषणार्थ निम्न तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है –

❖ **गिरावट का चरण** – ग्राफ के प्रारम्भिक भाग में वर्ष 2012–13 में चालू अनुपात 0.72 था जो कि निरन्तर गिरते हुए 2015–16 तक 0.43 तक पहुच गया । यह गिरावट इस बात का संकेत थी कि निगम निरन्तर विकट तरलता समस्या से जूझ रहा था । इस स्थित में निगम की हालत इतनी चिन्ताजनक थी ऋणों पर ब्याज चुकाने की व्यवस्था भी ऋण लेकर ही की जा रही थी । इस समस्या के प्रमुख कारणों में ऋण की उच्च ब्याज लागतें , अत्यधिक वितरण एवं वाणिज्यिक हानियां, कमजोर राजस्व सग्रहण नीति और विद्युत खरीद की टैरिफ की तुलना में अधिक लागत होना था ।

❖ **निम्नता एवं स्थिरता का चरण** – ग्राफ का दूसरा चरण वित्तीय वर्ष 2016–17 से 2017–18 तक का है, इस अवधि में चालू अनुपात अपने निम्नतम स्तर 0.41 पर स्थिर था , यह अवधि उदय योजना के क्रियान्वयन से भी जुडी हुयी है जब राज्य सरकार द्वारा निगम के ऋणों का 75 प्रतिषत भार वहन किया गया, जिससे निगम के चालू

दायित्वों में तात्कालिक वृद्वि रूक गयी और ब्याज भुगतान का दबाब कम होने लगा। हालांकि परिचालन अक्षमताओं के अब भी बने रहने और तकनीकि एवं वितरण हानियों के धीरे–धीरे कम होने से संरचनात्मक सुधारों का प्रभाव इस अवधि में कम देखने को मिला । परिणामस्वरूप चालू अनुपात अपने निम्नतम स्तर 0.41 पर स्थिर रहा ।

❖ **सुधार एवं उठाव का क्रम –** यह अवधि 2018–19 से 2024–25 तक की है, इस अवधि में चालू अनुपात धीरे –धीरे वृद्वि की ओर अग्रसर होता दिख रहा है इस वृद्वि के पीछे मुख्य कारणों में उदय योजना का दीर्धकालीन प्रभाव तो देखने को मिलता ही है, साथ ही बेहतर राजस्व वसूली, सरकारी अनुदानों की समय पर प्राप्ति , नीतिगत एवं प्रषासनिक सुधार जैसे – स्मार्ट मीटरिंग, मासिक मीटर रिंडिग और नियन्त्रीत तकनीकी हानियों जैसे उपायों एवं वित्तीय अनुषासन से वित्तीय स्थिति में स्थायीत्व आया ।

इस प्रकार उपरोक्त ट्रैड विष्लेषण से यह परिमाणित होता है कि उदय योजना के परिणामस्वरूप अल्पकाल में निगम के चालू अनुपात में गिरावट कम हुयी तथा दीर्धावधी के लिए सुधार की गुजांइष रही किन्तु अब भी निगम का चालू अनुपात अपने आदर्ष स्तर 2: 1 की तुलना में बेहद कम है फिर भी कम्पनी की अल्पकालीन वित्तीय स्थिति पहले की तुलना में अधिक नियन्त्रित एवं स्थिरता को प्रदर्षित कर रही है । इस प्रकार उदय योजना ने तात्कालिक नही बल्कि क्रमिक सुधार को जन्म दिया

2. टी –टेस्ट परीक्षण –

उदय योजना के पूर्व और पश्चात के चालू अनुपात के औसत में अन्तर की महता जांचने के लिए शोधार्थी द्वारा ज़्व ॅउचसम ज्.ज्मेज का भी प्रयोग किया गया । परीक्षण की शून्य परिकल्पना (H_0) यह है कि उदय योजना के पहले और बाद के चालू अनुपातों के औसत में कोई महत्वपूर्ण सार्थक अन्तर विद्यमान नहीं है तथा वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) यह है कि दोनो अवधियों के औसत चालू अनुपातों में महत्वपूर्ण सार्थक अन्तर विद्यमान है ।ॅपहदपपिबंदबम स्मअमस 5 प्रतिषत रखा गया है । परीक्षण के परिणाम निम्नानुसार प्राप्त हुए –

उदय से पूर्व चालू अनुपात	
वित्तीय वर्ष	चालू अनुपात
2012–13	0.72
2013–14	0.51
2014–15	0.45
2015–16	0.43

उदय के पश्चात चालू अनुपात	
वित्तीय वर्ष	चालू अनुपात
2016–17	0.45
2017–18	0.41
2018–19	0.41
2019–20	0.48
2020–21	0.54
2021–22	0.56
2022–23	0.55
2023–24	0.69

`तण्छव	थ्वतउनसं	ठमवितम न्व।ल	।जिमत न्व।ल
डमंद	$\bar{X} = \sum \frac{X}{N}$	0ण्528	0ण्511
`व	$SD = \sqrt{\sum \frac{(X-\overline{X})}{n-1}}$	0ण्133	0ण्094
ज दृ टंसनम	ज त्र $\frac{\bar{X}1-\bar{X}2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{n_1}+\frac{SD_2^2}{n_2}}}$	0ण्22	
क्ि	$(n_1+n_2)-2$	10	
जंइसम अंसनम वि श्जश ´ज 5ः `पहदपपिबंदबम स्मअमस		2ण्228	
ज.अंसनम ;0ण्22द्ध ढ जंइसम अंसनम ;2ण्228द्ध		भ्0 ।बबमबचजमक	

अतः टी–टेस्ट परीक्षण के परिणाम से यह स्पष्ट है कि टी का परिकलित मान 0.22, उसके सारणीयन मान 2.228 से काफी कम है अतः शुन्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि योजना के लागू होने के उपरान्त औसतन चालू अनुपात में सांख्यीकी रूप से कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ ।

2. त्वरित अनुपात विष्लेषण –

सामान्यतः निगम की अल्पकालीन शोधन क्षमता के माप हेतु चालू अनुपात का ही उपयोग किया जाता है किन्तु व्यवहार में यह अनुपात वास्तविक तरलता को सही रूप से प्रदर्षित नहीं कर पाता, क्योकि कई दफा चालू सम्पत्तियों में ऐसी मदों को सम्मिलित कर लिया जाता जो वास्तव में शीघ्र नगद में परिवर्तित नही हो पाती है तो ऐसी स्थिति में चालू अनुपात भ्रामक निष्कर्ष प्रस्तुत करतें है। प्रस्तुत विष्लेषण में चालू सम्पत्तियो से अल्प तरल एवं वसूल न होने वाली मदों को अलग कर त्वरित अनुपात की गणना की गयी है , और इसके माध्यम से डिस्कॉम की वास्तविक तरलता स्थिति एवं शोधनक्षमता का विष्लेषण किया गया है । डिस्कॉम के वित्तीय विवरणों के विष्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि चालू सम्पत्तियों में ऐसी सम्पत्तियों को शामिल किया गया है जिनसे शीघ्र वसूली की संभावना बहुत ही कम या न के बराबर है जैसे – पीडीसी देनदार (जिनका विद्युत सम्बन्ध स्थायी रूप से विच्छेद कर दिया गया है), राज्य सरकार का बकाया अनुदान/सब्सिडी एवं स्थायी सम्पत्तियो की चोरी एवं नगद चोरी से सम्बन्धित मदें। ये मदें न तो तत्काल में नगद में परिवर्तित होती है और न ही अल्पकालीन दायित्वों के भुगतान हेतु सहायक होती है।

अध्ययन के दौरान कम्पनी के वित्तीय विवरणों से प्राप्त त्वरित अनुपातों के विष्लेषण के लिए व्दम ॅल ।छव्।। एवं च्वेज भ्वब ज्नामल भ्ैक् – परीक्षण का प्रयोग किया गया है । उक्त परीक्षणो से प्राप्त परिणामों के आधार पर त्वरित अनुपात एवं तरल सम्पत्तियों की सार्थकता एवं औचित्यता का विष्लेषण किया गया है । त्वरित अनुपात पर सांख्यिीकि परीक्षण हेतु अध्ययन अवधि को निम्न तीन अवस्थाओं में विभाजित किया गया है –

Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

1. उदय योजना से पूर्व (च्तम न्क।ल च्मतपवक)

उदय से पूर्व त्वरित अनुपात			
वित्तीय वर्ष	2012–13	2013–14	2014–15
त्वरित अनुपात	0.62	0.46	0.37

2. उदय योजना के दौरान (क्नतपदह न्क।ल च्मतपवक)

उदय के दौरान त्वरित अनुपात				
वित्तीय वर्ष	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
त्वरित अनुपात	0.27	0.26	0.21	0.18

3. उदय योजना के बाद (।जिमत न्क।ल च्मतपवक)

उदय के पश्चात त्वरित अनुपात						
वित्तीय वर्ष	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23	2023–24	2024–25
त्वरित अनुपात	0.17	0.19	0.20	0.28	0.38	0.39

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वित्तीय वर्ष 2012–13 से 2014–15 के लिए डिस्कॉम के वित्तीय विवरणों में पीडीसी देनदारों का विवरण अलग से नहीं दर्षाया गया है । इस कारण इस अवधि के लिए त्वरित अनुपात की गणना समस्त देनदारों को त्वरित सम्पत्तियां मानकर की गयी है । अतः इस अवधि के लिए त्वरित अनुपात पूर्णत समायोजित नहीं बल्कि आंषिक रूप से समायोजित है ।

1. व्दम ॅल ।छव्ट। परीक्षण –

उपरोक्त तीनों अवस्थाओं में तरल अनुपात के औसत की सार्थकता हेतु एक मार्गी अनोवा परीक्षण का प्रयोग किया गया । परीक्षण के लिए शून्य परिकल्पना भ्0 यह है कि निगम में त्वरित अनुपात के औसत में उदय योजना के पहले, उदय योजना के दौरान और उदय योजना के बाद की अवधि के मध्य सांख्यीकी रूप से कोई महत्त्वपूर्ण सार्थक अन्तर विद्यमान नहीं है । इसी प्रकार वैकल्पिक परिकल्पना भ्1 यह है कि उक्त अवस्थाओं के लिए त्वरित अनुपात के औसत में महत्वपूर्ण सार्थक अन्तर विद्यमान है ।

शून्य परिकल्पना – भ्0 रू $\mu_1 = \mu_2 = \mu_3$
वैकल्पिक परिकल्पना – भ्1 रू $\mu_1 \neq \mu_2 \neq \mu_3$

ॅतण्छव	थ्वतउनसं	ठमवितम न्व ाल	क्नतपदह न्व ाल	।जिमत न्व ाल
ॅतण्छव	थ्वतउनसं	ठमवितम न्व ाल	क्नतपदह न्व ाल	।जिमत न्व ाल
डमंद	$\bar{X} = \sum \frac{X}{N}$	0ण483		
ळड	$GM = \frac{Total\ of\ Liquid\ Ratio}{N}$	0ण306		
ॅठ	ॅनउ वि्ुनतम इमजूममद हतवनचे ॅठ त्र $\sum n_i (\bar{X}$. ळडद्ध^2	0ण126		
ॅ कि	$SSW = \sum(X - \bar{X})^2$ त्र;0ण032़0ण005़0ण004द्ध त्र0ण041	0ण041		
	कि ;ठद्ध त्र ा .1	; 3 दृ 1द्ध त्र 2		
	कि ;ॅद्ध त्र छ. ा	;13 दृ 3द्ध त्र 10		
डैठ	$MSB = \frac{SSB}{df_{ssb}}$ त्र $\frac{0.126}{2}$	0ण063		
डैॅ	$MSW = \frac{SSW}{df_{ssw}}$ त्र $\frac{0.041}{10}$	0ण0041		
थ्ॅजंजपेजपब		$F = \frac{MSB}{MSW}$		
थ् जंइसम अंसनम ंज 5ः ॅपहदपपिबंदजम समअमस		4ण10		
त्मेनसज त्र थ्बंसबनसंजमक;15ण37द्ध झ थ् जंइसम ;4ण10द्ध		भ्0 त्मरमबजमक		
च अंसनम त्र1–थ्ब्क्थ्;15ण37य2ए10द्ध		च ≈ 0ण0010		

अतः एक मार्गी परीक्षण के परिणामों के अनुसार यह स्पष्ट कि स्वान्तत्रय कोटि 2,10 पर प्राप्त थ्ॅजंजपेजपब का गणितिय मान 15.37 है जो कि 5 प्रतिषत सार्थकता स्तर पर थ् के सारणीयन मान 4.10 से अधिक है । साथ ही च.अंसनम परीक्षण से प्राप्त मान 0.10 प्रतिषत है जो कि 5 प्रतिषत से कम है । अतः इन दोनो मापदण्डों के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा यह परिणाम निकाला जाता है कि अध्ययन की तीनों अवधियो में त्वरीत अनुपातों के औसतों के बीच सांख्यीकी रूप से महत्वपूर्ण अन्तर विद्यमान है । चूंकि च.अंसनम 0.10 प्रतिषत

प्राप्त हुयी है जो कि 1 प्रतिषत से भी कम है अतः यह परिणाम 5 प्रतिषत सार्थकता स्तर के साथ–साथ 1 प्रतिषत सार्थकता पर भी सांख्यीकी रूप से सषक्त माना जा सकता है ।

2. च्वेज.भ्वब ज्नामल ;भ्ैक्द्ध परीक्षण –

एक मार्गीय अनोवा यह सिद्व करता है कि अध्ययन की उक्त तीनों अवधियों (उदय से पहले, उदय के दौरान और उदय के पष्चात) के त्वरीत अनुपातों के औसत में समानता नहीं है किन्तु यह स्पष्ट नहीं करता कि कौनसी अवधि किस अवधि से कितनी और क्यो भिन्न है इसी कारण शोधार्थी द्वारा च्वेज.भ्वब ज्नामल परीक्षण का भी प्रयोग किया गया है । परीक्षण के अन्तर्गत किसी भी दो समूहों प एव र के बीच औसतों के अन्तर की सार्थकता का सांख्यिकीय परीक्षण निम्न निर्णय शर्त के आधार पर किया जाता है –

यदि – $|\bar{X}_i - \bar{X}_j| > HSD$ तो समूह प एव र के औसतों के मध्य अन्तर सांख्यिकी रूप से सार्थक ैं;जंजपेजपबंससल ैपहदपपिबंदजद्ध माना जाता है ।

यदि – $|\bar{X}_i - \bar{X}_j| \leq HSD$ तो समूह प एव र के औसतों के मध्य अन्तर सांख्यिकी रूप से असार्थक ैं;जंजपेजपबंससल प्देपहदपपिबंदजद्ध माना जाता है ।

च्वेज.भ्वब ज्नामल ;भ्ैक्द्ध परीक्षण के परिणाम इस प्रकार है –

$$HSD = q_{\propto}k, df_w \times \sqrt{\frac{MS_w}{n}}$$

$$HSD = 3.77 \times \sqrt{\frac{0.041}{4.33}}$$

$$HSD = 0.116$$

यहां पर –

- ुαएएकि् त्र ैजनकमदजप्रमक त्ंदहम अंसनम
- डै ू त्र डमंद ुनंतम ˘पजीपद त्र 0ण्0041 थ्तवउ ।दवअं
- द त्र प्रत्येक समूह का औसत ॅंउचसम ॅप्रम त्र $\frac{3+4+6}{3} = 4.33$
- ज्नामल ु टंसनम / 5ः समअमस त्र ु;0ण्05ए3ए10द्ध त्र3ण्77

$$HSD = 3.77 \times \sqrt{\frac{0.041}{4.33}}$$

परीक्षण निर्णय –

1. उदय पूर्व एवं उदय के दौरान

$$|\bar{X}_i - \bar{X}_j| > HSD$$
$$|0.483 - 0.230| > 0.116$$
$$0.253 > 0.116\ (Significant)$$

2. उदय के दौरान एवं उदय के पश्चात

$$|\bar{X}_i - \bar{X}_j| > HSD$$
$$|0.268 - 0.230| > 0.116$$
$$\mathbf{0.038} < 0.116\ (Not\ Significant)$$

3. उदय से पूर्व और उदय के पश्चात

$$|\bar{X}_i - \bar{X}_j| > HSD$$
$$|0.483 - 0.268| > 0.116$$
$$0.215 > 0.116\ (Significant)$$

अतः परीक्षण निर्णयों से स्पष्ट है कि त्वरित अनुपात में प्रमुख परिवर्तन उदय से पूर्व और उदय के दौरान की अवधि के बीच परीलक्षित हुआ है, इन अवधियों के बीच त्वरित अनुपात में सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण गिरावट पायी गयी । इसी प्रकार उदय से पूर्व एवं उदय के पश्चात की अवधि में भी महत्वपूर्ण अन्तर विद्यमान है । जबकि उदय और उदय के बाद की अवधि के बीच अन्तर सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया, जो यह इंगित करता है कि इस अवधि में त्वरित तरलता में सुधार सांख्यिकी रूप से अपर्याप्त रहा एवं उदय योजना का प्रभाव प्रांरम्भिक वित्तीय पुनर्सरंचना तक ही सीमित रहा, जो कि दीर्घकालीन तरलता सुदृढीकरण हेतु परिचालन दक्षता में सुधार पर बल देता है ।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन का उददे्ष्य जोधपुर डिस्कॉम की अल्पाकाली शोधन क्षमता का विष्लेषण करना था, जिसके लिए चालू अनुपात एवं त्वरित अनुपात को प्रमुख सूचक के रूप में अपनाया गया । अध्ययन को उदय योजना के सन्दर्भ में तीन अवधियों – उदय से पूर्व, उदय के दौरान और उदय के पश्चात, में विभाजित कर सांख्यिकी परीक्षणो के माध्यम से यह परखा गया कि क्या योजना के लागू होने से डिस्कॉम की अल्पकालीन शोधन क्षमता कोई सार्थक या स्थायी सुधार हुआ है अथवा नहीं ।

चालू अनुपात पर उपनति परीक्षण का निष्कर्ष – परीक्षण के परिणाम यह दर्षाते है कि उदय योजना के लागू होने से पूर्व डिस्कॉम की वित्तीय स्थिति निरन्तर कमजोर होती जा रही थी, जिसका प्रमुख संकेत चालू अनुपात में गिरावट था । उदय योजना के पष्चात, राज्य सरकार द्वारा ऋण पुनर्गठन एवं ब्याज भुगतान राहत के कारण डिस्कॉम को अल्पकालीन राहत अवष्य प्राप्त हुयी । किन्तु विचार योग्य यह भी है कि पूरे अध्ययन काल के दौरान चालू अनुपात 1 से भी कम बना रहा, जो कि यह स्पष्ट करता है कि निगम अपने चालू दायित्वों की पूर्ती हेतु पर्याप्त चालू सम्पत्तियां संचित नहीं कर सका और निगम की तरलता समस्या केवल वित्तीय पुनर्गठन से हल नहीं हो सकती । हालांकि यह भी सत्य है कि उदय योजना ने वित्तीय गिरावट को तो नियन्त्रित किया , किन्तु यह पूर्ण वित्तीय सुदृढ़ता प्रदान करने में असफल रही । उक्त परीक्षण से यह भी परिलक्षित हुआ कि चालू अनुपात डिस्कॉम

जैसे सार्वजनिक सेवा उपक्रम के सन्दर्भ में वास्तविक तरल स्थिति को पूर्णतः प्रतिबिम्ब करने में असमर्थ है जिसका प्रमुख कारण यह है कि चालू सम्पत्तियों में ऐसी मदों को भी सम्मिलित किया गया है जिनका वास्तविक नकदी में रूपान्तरण संदिग्ध अथवा विलम्बित है ।

चालू अनुपात पर टी परीक्षण का निष्कर्ष – उदय पूर्व और उदय पश्चात के चालू अनुपातों में अन्तर की सार्थकता परीक्षण के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया । परीक्षण के परिणाम यह दर्षाते है कि अनुपात के औसतों में पाया गया अन्तर सांख्यिकी रूप से कमजोर एवं कम सार्थक है । इसका अर्थ है कि यद्यपि उदय योजना के लागू होने के पश्चात चालू अनुपात में कुछ मात्रात्मक सुधार दिखाई देता है किन्तु यह सुधार इतना प्रबल नहीं है कि पूर्णतः योजना की सफलता का प्रमाण माना जा सके । टी –टेस्ट इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि चालू अनुपात पर आधारीत विष्लेषण से प्राप्त सुधार मुख्यतयः लेखांकन समायोजन और संरचनात्मक वर्गीकरण का ही परिणाम है न कि वास्तविक नगदी प्रवाह में सुधार । अतः टी –टेस्ट के परिणाम यह इंगित करते है कि उदय के कारण डिस्कॉम की तरलता स्थिति में सुधार आंषिक, अस्थायी एवं अपर्याप्त है ।

त्वरित अनुपात पर व्दम ॅल ।छव्ट। परीक्षण का निष्कर्ष – चालू अनुपात की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अध्ययन में त्वरित अनुपात को अधिक यथार्थपरक सूचक के रूप में अपनाया गया । त्वरित अनुपात की गणना करते समय चालू सम्पत्तियों से पीडीसी देनदार, राज्य सरकार की बकाया सब्सिडी, चोरी से सम्बन्धित समायोजन और अन्य संदिग्ध मदों को अलग कर वास्तविक त्वरित सम्पत्तियों का निर्धारण किया गया । व्दम ॅल ।छव्ट। परीक्षण के मानों से यह स्पष्ट है कि तीनो अवधियों के त्वरित अनुपातों के औसतों में अन्तर सार्थक रूप से विद्यमान है, जो इस तथ्य की पुष्टि करतें है कि समय के साथ डिस्कॉम की वास्तविक तरलता स्थिति में परिवर्तन तो हुये है लेंकिन ये परिवर्तन केवल संयोगवष नहीं है बल्कि नीतिगत हस्तक्षेप एवं वित्तीय पुनर्गठन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए हैं ।

त्वरित अनुपात पर च्वेज भ्वब ज्नामल ैक परीक्षण का निष्कर्ष – ।छव्ट। परीक्षण से अन्तर सिद्व हो जाने के पश्चात यह आवष्यक हो गया कि यह निर्धारित किया जावें कि अन्तर किन अवधियों के बीच अधिक प्रभावी रूप से विद्यमान है । इस उद्वेष्य से च्वेज भ्वब ज्नामल ैक परीक्षण का प्रयोग किया गया , परीक्षण के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि –

- उदय पूर्व और उदय के दौरान त्वरित अनुपातों के औसतों के मध्य अन्तर सांख्यिकी रूप से सार्थक है जो यह दर्षाता है कि योजना के लागू होने के दौरान त्वरित तरलता में गिरावट आई , जिसका प्रमुख कारण योजना के प्रारम्भिक चरण में वित्तीय पुनर्सरंचना की प्रक्रिया, लेखांकन समायोजन तथा बकाया मदों की वास्तविक पहचान (पीडीसी देनदार) रहा ।
- उदय पूर्व और उदय पश्चात त्वरित अनुपातों के औसतों के मध्य भी अन्तर सांख्यिकी रूप से सार्थक है जो इस बात का संकेत है कि उदय पश्चात त्वरित अनुपात के औसत में जो अन्तर दिखाई देता है वह उदय पूर्व की तुलना में संरचनात्मक रूप से भिन्न है और इसमें वास्तविक त्वरित सम्पत्तियों की स्थिति अधिक यथार्थपरक एवं संगत रूप से उभर कर आती है ।
- उदय के दौरान और पश्चात की अवधि में अन्तर असार्थक पाया गया है जो इस बात का द्योतक है कि योजना के बाद डिस्कॉम की तरलता स्थिति में कोई ठोस एवं निर्णायक सुधार नहीं हो सका और योजना का प्रभाव प्रारम्भिक ऋण पुनर्गठन तक ही सीमित रहा ।

अतः अध्ययन के समस्त विष्लेषणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चालू अनुपात डिस्कॉम की तरलता का एक अतिरंजित एवं भ्रामक चित्र प्रस्तुत करता है क्योकि इसमें ऐसी मदें है जो वास्तविक भुगतान स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करती । चालू अनुपात पर आधारित उपनति विष्लेषण एवं टी –टेस्ट से प्राप्त सुधार तथा त्वरित अनुपात पर आधारित ।छव्ट। एवं च्वेज.भ्वब ज्नामल ैक परीक्षण से प्राप्त स्पष्ट अन्तर यह दर्षाते है कि

डिस्कॉम की वास्तविक तरलता समस्या अभी भी ज्यों की त्यों है । अतः कहा जा सकता है कि उदय योजना से डिस्कॉम की तरलता स्थिति को अस्थायी रूप से स्थिर करने में सहायता तो मिली किन्तु दीर्घकालीन वित्तीय सुद्ढता सुनिष्चित करने हेतु परिचालन दक्षता, मजबूत संग्रहण नीति, नियन्त्रीत तकनीकी हानियां, विद्युत चोरी नियन्त्रण एवं समयबद्व सब्सिडी भुगतान जैसे संरचनात्मक सुधार अत्यन्त अपेक्षित है । अतः उक्त शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उदय योजना आवष्यक तो थी किन्तु अपर्याप्त थी । डिस्कॉम की दीर्धकालीक वित्तीय सुदृढता हेतु नीति निर्माताओं को वित्तीय पुनर्गठन के साथ –साथ **परिचालन सुधारों, शासन सुधारों और जवाबदेही आधारित वित्तीय प्रबन्धन** को समान महत्व देना होगा ।

नितिगत निहितार्थ एवं सुझाव –

1. **तरल संकेतकों की पुनर्परिभाषा से सम्बन्धित** – अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चालू अनुपात डिस्कॉम की वास्तविक तरलता स्थिति को पूर्णतः प्रतिबिम्ब नहीं करते । चालू सम्पत्तियों में कई मदे जैसे – अनबिल्ड राजस्व, लम्बित सरकारी अनुदान एवं विवादित देनदार व्यावहारिक रूप से नगदी में शीघ्र परिवर्तित नहीं हो पाते अत : –

➢ नीति निर्धारकों को डिस्कॉम के लिए वित्तीय मूल्यांकन में त्वरित अनुपात को एक अनिवार्य निगरानी संकेतक के रूप में अपनाया जाना चाहिए ।

➢ वित्तीय रिपोर्टिंग में यह स्पष्ट किया जावें कि कौनसी चालू सम्पत्तिया वास्तविक तरल सम्पत्तियां है और कौनसी केवल लेखांकन प्रकृति की ।

➢ नियामक संस्थाओं द्वारा डिस्कॉम के लिए स्पुनपकपजल ठमदबीउंता त्जपवे निर्धारत किये जाने चाहिए ।

2. **ऋण पुनर्गठन से सम्बन्धित –** उदय योजना का प्रमुख आधार ऋण पुनर्गठन था जिसके अन्तर्गत राज्य सरकारों द्वारा डिस्कॉम का 75 प्रतिषत ऋण प्रभार अपने उपर ले लिया गया । अध्ययन के निष्कर्ष दिखाते है कि इससे डिस्कॉम की अल्पकालीन शोधन क्षमता में अस्थायी सुधार तो हुये किन्तु दीर्घकालीक सुधार परिलक्षित नहीं हुए अतः –

➢ भविष्य की किसी भी योजना में ऋण पुनर्गठन को एकमात्र समाधान के रूप में न अपनाया जावें ।

➢ ऋण राहत को प्रदर्षन आधारित शर्तों से जोड़ा जावें जैसे – समेकित वितरण एवं वाणिज्यिक हानियों में एक निष्चित प्रतिषत की वार्षिक कमी, बकाया वसूली दक्षता में सुधार इत्यादि ।

3. **नगद प्रवाह प्रबन्धन से सम्बन्धित** – त्वरित अनुपात विष्लेषण से यह संकेत मिलता है कि डिस्कॉम की मूल समस्या नगदी प्रवाह की अस्थिरता है । समय पर बिल संग्रह न होना, सरकारी विभागो के लम्बित भुगतान एवं सरकारी सब्सिडी भुगतान में बिलम्ब– इन सभी का प्रत्यक्ष प्रभाव डिस्कॉम की तरलता पर पड़ता है अत : –

➢ राज्य सरकारों को सब्सिडी भुगतान के लिए ९्बतवू डमबींदपेउ अपनाना चाहिए ।

➢ सरकारी विभागों के बकाया बिलों को बजट आवंटन के माध्यम से समयबद्व रूप से समायोजित किये जावें ।

➢ डिस्कॉम मे ३ै थ्सवू थ्वतमबेंजपदह मॉडल को अनिवार्य रूप से लागू किया जावें ।

4. **परिचालन दक्षता एवं तकनीकि एवं वाणिज्यिक हानियों से सम्बन्धित –** अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यदि वित्तीय पुनर्गठन के पश्चात भी परिचालन अदक्षता बनीं रहती है तो तरलता समस्या का पुनः होना लाजमी है । समेकित वित्तीय एवं वाणिज्यिक हानियां अभी भी 22 प्रतिषत के आसपास बनी हुयी है जो परिचालन अदक्षता का प्रमुख द्योतक है अतः –

➢ तकनीकि एवं वाणिज्यिक हानियों को केवल तकनीकि समस्या न मानते हुए इसे ळवअमतदंदबम ⁾ेनम के रूप में देखा जाए ।

➢ स्मार्ट मीटरिंग , प्री पेड मीटरिंग एवं डिजिटल बिलिंग को नीतिगत स्तर पर प्राथमिकता दी जावें ।

➢ विद्युत चोरी रोकने हेतु डाटा आधारित प्रणाली विकसित की जावें ।

➢ कर्मचारियों को प्रोत्साहन हेतु स्वे त्मकनबजपवद.सपदामक प्दबमदजपअम योजनाओं को लागू किया जावें ।

5. वित्तीय अनुषासन एवं सुषासन से सम्बन्धित – अध्ययन के निष्कर्ष बताते है कि डिस्कॉम की वित्तीय स्थिति केवल संसाधनों की कमी का परिणाम नहीं है बल्कि वित्तीय अनुषासन एवं प्रबन्धन में जवाबदेही की कमी भी इसका प्रमुख कारण है अतः –

➢ डिस्कॉम को वास्तविक रूप से वाणिज्यिक संस्था के रूप में संचालित किया जावें ।

➢ वित्तीय निर्णयों में राजनैतिक हस्तक्षेप को न्यूनतम करने हेतु व्चमतंजपवदंस ।नजवदवउल सुनिष्चित की जावें ।

➢ प्रबन्धन में जवाबदेहिता को लागू किया जावें ।

6. नियामक ढांचे से सम्बन्धित – अध्ययन यह संकेत देता है कि नियामक तंत्र की कमजोरी भी तरलता समस्या को बढाने में सहायक है अतः –

➢ टैरिफ निर्धारण को लागत रिफलेक्टिव बनाया जावे ।

➢ बकाया वसूली हेतु स्ंदक त्मअमदनम ।बज एवं न्ट ।बज का प्रभावी उपयोग किया जावे।

➢ बहु–वर्षीय टैरिफ ढांचे को अधिक प्रभावी बनाया जावें ।

सन्दर्भ सूची –

1 **ैपदहीए ।ए – डपीतंए ।ण ज्ञण ;2018द्धण** *प्उचंबज वि चवूमत `मबजवत तमवितउे वद पिदंदबपंस चमतवितउंदबम वि क्पैब्व्डे पद प्दकपंण* प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि म्दमतहल म्बवदवउपबे ंदक च्वसपबलए 8;3द्धए 40दृ49ण

2 **ठींजजंबींतललंए ैण ब्ण ;2015द्धण** *च्वूमत `मबजवत तमवितउ पद प्दकपंरू ैल ीं पज पिसमकघ्* म्दमतहल च्वसपबलए 83ए 205दृ215ण

3 **व्पसपए च्ण ज्ञण ;2018द्धण** त्मवितउे पद प्दकपंद चवूमत कपेजतपइनजपवद `मबजवतरू प्েनमे ंदक बींससमदहमेण *श्रवनतदंस वि प्दतिंेजतनबजनतम क्मअमसवचउमदजए* 10;1दृ2द्धए 45दृ60ण

4 **ैंतउंए त्ंअपदकतं ज्ञनउंत – ळवसलंदए छंउतंजंण** *प्दजमहतंजमक म्अंसनंजपवद वि ब्वदेनउमत म्गचमतपमदबम ंदक ैमतअपबम फनंसपजल वि श्रक्टटछस्रू । थ्पमसक ।दंसलेपे ।चचतवंबीण* प्श्रध्डत्ए जंदजपं न्दपअमतेपजलए क्मचंतजउमदज वि बवउउमतबमए ैतप ळंदहंदहंतण

5 डपदपेजतल वि च्वूमत ;2015द्धण *न्ूंस क्पैब्व्ड ।ेनतंदबम ल्वरदं ;न्क।ल्द्धरू व्चमतंजपवदंस ळनपकमसपदमेण* ळवअमतदउमदज वि प्दकपंण

6 क्पैब्व्ड ।ददनंस त्मचवतजे ;2012.13 जव 2024.25द्धण ळवअमतदउमदज वि त्ंरंेजींदण